National Conference on Recent Advances in Engineering, Technology, Science, Management and Humanities (NCRAETSMH – 2025)

23rd February, 2025, Nagpur, Maharashtra, India.

CERTIFICATE NO : NCRAETSMH /2025/C0225134

मध्य प्रदेश में गोंड चित्रों की उत्पत्ति एवं विकास का अध्ययन

Shailja Sullere

Research Scholar, Department of Journalism and Mass Communication,
Mansarovar Global University, Sehore, M.P., India.

सारांश

मध्य प्रदेश भारतीय उपमहाद्वीप का एक ऐसा राज्य है जो अपनी प्राचीन संस्कृति, विविध जनजातीय परंपराओं और कलात्मक धरोहरों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ निवास करने वाली विभिन्न जनजातियों ने अपने जीवन, विश्वास और सामाजिक-सांस्कृतिक अनुभवों को कला और चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। इनमें से गोंड जनजाति की चित्रकला विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसने न केवल इस जनजाति की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक यात्रा को दर्शाया है, बल्कि समूचे भारत की लोककला और जनजातीय कला परंपराओं में भी एक विशेष स्थान बनाया है। गोंड चित्रकला की उत्पत्ति प्राचीन काल से मानी जाती है, जब गोंड जनजाति ने अपनी धार्मिक मान्यताओं, जीवनदर्शन और प्रकृति के प्रति गहरे जुड़ाव को रेखाओं, रंगों और प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत करना प्रारंभ किया। इस कला का आरंभिक स्वरूप गुफाओं और घरों की दीवारों पर बने भित्तिचित्रों और आकृतियों में मिलता है, जहाँ प्रकृति, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, देव-देवियाँ तथा लोककथाओं से संबंधित दृश्य प्रमुखता से अंकित किए जाते थे।

मुख्यशब्द- मध्य प्रदेश, गोंड चित्र, जनजातीय परंपरा, कलात्मक धरोहर, सामाजिक-सांस्कृतिक अनुभव, कला और चित्र, लोककला, धार्मिक मान्यता

प्रस्तावना

गोंड चित्रकला का आधार गोंड समुदाय की समृद्ध मौखिक परंपरा और लोककथाओं में निहित है। गोंड जनजाति सदियों से लोककथाओं, गीतों और पौराणिक कथाओं के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करती आई है। इन कथाओं में जीवन की गहराइयों, संघर्षों, विश्वासों और प्रकृति के साथ संबंधों को विशेष महत्व दिया गया है। यही कारण है कि गोंड चित्रों में वृक्ष, पशु-पक्षी, चाँद, सूरज, नदियाँ और पर्वत प्रमुख स्थान रखते हैं। गोंड समाज मानता है कि संसार का प्रत्येक जीवित प्राणी और प्राकृतिक तत्व पवित्र है और

उसमें किसी न किसी रूप में देवत्व का वास है। यही दर्शन गोंड चित्रों में भी प्रकट होता है, जहाँ आकृतियाँ जीवंत दिखाई देती हैं और उनमें गतिशीलता का अनुभव होता है।

गोंड चित्रों की उत्पत्ति का ऐतिहासिक दृष्टिकोण भी उल्लेखनीय है। शोधकर्ताओं के अनुसार, गोंड जनजाति द्रविड़ीय मूल की है और इसका इतिहास हजारों वर्षों पुराना है। गोंड समाज ने अपने जीवन और धार्मिक आस्थाओं को चित्रों के रूप में अंकित करना तब प्रारंभ किया जब लिखित अभिलेख उपलब्ध नहीं थे। उस समय चित्र ही संप्रेषण का प्रमुख माध्यम थे। इस प्रकार गोंड चित्र न केवल कलात्मक अभिव्यक्ति थे बल्कि इतिहास, संस्कृति और धार्मिक मान्यताओं के जीवंत दस्तावेज भी थे। मध्य प्रदेश के मंडला, छिंदवाड़ा, डिंडोरी, बैतूल और सागर जैसे जिलों में गोंड चित्रों के प्राचीन स्वरूप पाए जाते हैं।

गोंड चित्रकला का विकास कालांतर में विभिन्न चरणों से होकर गुज़रा। प्रारंभ में यह कला केवल धार्मिक अनुष्ठानों, विवाह, त्योहारों और जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं से जुड़ी हुई थी। घरों की दीवारों, आँगनों और फर्श पर बनाई जाने वाली ये चित्रकृतियाँ समुदाय के सामूहिक जीवन का हिस्सा थीं। धीरे-धीरे इन चित्रों ने सजावटी रूप धारण किया और सौंदर्यबोध से जुड़कर लोककला का रूप ले लिया। गोंड चित्रों में प्रयुक्त रंग भी प्राकृतिक होते थे, जिन्हें पौधों, मिट्टी, पत्थरों और अन्य प्राकृतिक वस्तुओं से तैयार किया जाता था। लाल, पीला, हरा, काला और सफेद रंग प्रमुखता से प्रयोग किए जाते थे। इन रंगों का उपयोग केवल सजावट के लिए नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक रूप में भी होता था।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में गोंड चित्रकला ने एक नए युग में प्रवेश किया, जब इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलने लगी। प्रसिद्ध गोंड कलाकार जंगड़ सिंह श्याम ने इस कला को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने परंपरागत गोंड चित्रों को आधुनिक कैनवास और रंगों में प्रस्तुत किया और इस कला को 'गोंड आर्ट' के रूप में लोकप्रिय बनाया। उनकी चित्रकृतियों में परंपरा और आधुनिकता का अद्भुत संगम दिखाई देता है, जिसने गोंड चित्रों को समकालीन कला के रूप में स्थापित किया। जंगड़ सिंह श्याम की सफलता के बाद गोंड कला ने न केवल मध्य प्रदेश में, बल्कि देश-विदेश में भी अपनी पहचान बनाई। आज गोंड चित्रकला का विकास अनेक रूपों में हो रहा है। पहले जो कला घर की दीवारों और आँगनों तक सीमित थी, अब वह कागज़, कपड़े और कैनवास पर भी बनाई जाने लगी है। आधुनिक समय में गोंड कलाकार

डिजिटल माध्यमों और नई तकनीकों का भी उपयोग कर रहे हैं। इसके बावजूद इस कला की मूल आत्मा वही है, जो गोंड समाज की परंपरा, विश्वास और प्रकृति के प्रति आस्था से जुड़ी हुई है। गोंड चित्रों की विशेषता यह है कि इनमें बारीक रेखाओं, बिंदुओं और पैटर्न का प्रयोग कर आकृतियों को जीवंत बनाया जाता है। पक्षियों के पंख, पेड़ों की डालियाँ, मछलियों की चमक, और जानवरों की गतिशीलता को इस प्रकार चित्रित किया जाता है कि वे दर्शक को सजीव प्रतीत होते हैं।

गोंड चित्रकला केवल सौंदर्यबोध की कला नहीं, बल्कि गोंड समाज की सामूहिक स्मृति और सांस्कृतिक पहचान भी है। यह कला समाज को उसकी जड़ों से जोड़ती है और आधुनिकता के बीच परंपरा की निरंतरता बनाए रखती है। आज यह कला आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हो गई है। अनेक गोंड कलाकार अपनी कला को प्रदर्शनी, मेलों और अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक ले जा रहे हैं। इससे न केवल उनकी आजीविका में सुधार हो रहा है, बल्कि जनजातीय संस्कृति के संरक्षण और प्रसार में भी योगदान मिल रहा है। गोंड चित्रों का विकास शिक्षा और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में भी देखा जा सकता है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में गोंड कला पर शोध कार्य हो रहे हैं। साथ ही, गोंड चित्रों का प्रयोग सामाजिक संदेश देने और पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण तथा स्वास्थ्य जागरूकता जैसे विषयों पर लोगों को प्रेरित करने के लिए भी किया जा रहा है। इससे यह सिद्ध होता है कि यह कला परंपरा तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का साधन भी बन सकती है।

गोंड चित्रों में प्रकृति और जीवन दर्शन

गोंड चित्रकला भारतीय जनजातीय कला का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो विशेष रूप से मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति की सांस्कृतिक पहचान और जीवनदर्शन का प्रतीक मानी जाती है। गोंड समाज की जीवन शैली और उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति का सबसे प्रमुख आधार है – प्रकृति। गोंड जनजाति का मानना है कि संसार का प्रत्येक जीव, वृक्ष, पर्वत, नदी, चंद्रमा, सूर्य और यहाँ तक कि पत्थर भी जीवंत और दिव्य शक्तियों से परिपूर्ण हैं। यही मान्यता उनकी चित्रकला में सहज रूप से झलकती है। गोंड चित्रों में प्रकृति केवल सजावटी तत्व नहीं है, बल्कि यह उनके जीवन दर्शन और सांस्कृतिक अनुभवों का दार्शनिक आधार है। गोंड चित्रों में वृक्षों की विशेष भूमिका है। गोंड समाज 'सजन वृक्ष' या 'कल्पवृक्ष' को जीवन और उर्वरता का प्रतीक मानता है। चित्रों में अक्सर

वृक्षों को केंद्रीय स्थान दिया जाता है और उसके चारों ओर पशु-पक्षी, मनुष्य तथा अन्य प्राकृतिक दृश्य अंकित किए जाते हैं। वृक्ष यहाँ केवल छाया या फल देने वाला साधन नहीं, बल्कि जीवन का स्रोत और आत्मिक ऊर्जा का प्रतीक है। इसी प्रकार नदियाँ और जल स्रोत गोंड चित्रों में जीवनदायी शक्ति और शुद्धता के प्रतीक रूप में अंकित किए जाते हैं। मछलियाँ, मेढ़क, जलपक्षी और अन्य जलीय जीवों की आकृतियाँ जल और जीवन के पारस्परिक संबंध को दर्शाती हैं। गोंड चित्रों में पशु-पक्षियों का विशेष महत्व है। हिरण, बाघ, सांप, मछली, मोर, तोता, कौआ और अन्य जीव-जंतु उनकी चित्रकला के अभिन्न अंग हैं। यह केवल उनके पर्यावरण का हिस्सा नहीं, बल्कि उनके मिथकों और लोककथाओं से जुड़े देवत्व का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। उदाहरणस्वरूप, बाघ शक्ति और साहस का प्रतीक माना जाता है, जबकि मछली समृद्धि और उर्वरता का प्रतीक है। पक्षी गोंड चित्रों में स्वतंत्रता, संदेश और आत्मा के प्रतीक के रूप में अंकित किए जाते हैं। इस प्रकार पशु-पक्षियों के माध्यम से गोंड कलाकार जीवन के विविध आयामों और प्रकृति के साथ उसके गहरे संबंध को रेखांकित करते हैं।

गोंड चित्रों का जीवन दर्शन 'आनिमिज़्म' (Animism) की अवधारणा से जुड़ा हुआ है, जिसमें प्रत्येक वस्तु और प्राणी को आत्मा से युक्त माना जाता है। यह विचार गोंड समाज के दैनिक जीवन में गहराई से रचा-बसा है। उनके लिए संसार केवल भौतिक वस्तुओं का समूह नहीं, बल्कि एक जीवित और संवेदनशील इकाई है। यही कारण है कि गोंड चित्रों में हर रेखा और रंग गतिशीलता और जीवंतता से भरे होते हैं। कलाकार बारीक रेखाओं, बिंदुओं और पैटर्न का प्रयोग कर आकृतियों को इस प्रकार रचते हैं कि वे धड़कते, चलते और साँस लेते हुए प्रतीत हों। यह तकनीक उनके जीवन दर्शन का ही प्रतिफल है, जिसमें हर वस्तु जीवित और गतिशील मानी जाती है। गोंड चित्रों में जीवन दर्शन का एक अन्य पहलू सामूहिकता और समरसता से जुड़ा है। गोंड समाज में व्यक्ति का जीवन प्रकृति और समुदाय से अविभाज्य माना जाता है। यही सामूहिक चेतना चित्रों में प्रतिबिंबित होती है। एक वृक्ष की शाखाओं पर बैठे अनेक पक्षी या एक जलाशय में तैरती मछलियों का समूह इस बात का प्रतीक है कि जीवन केवल व्यक्तिगत अस्तित्व तक सीमित नहीं, बल्कि यह सामूहिक अनुभव और सहयोग पर आधारित है। गोंड चित्रकला में प्रकृति और जीवन दर्शन का यह अद्भुत संगम आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना सदियों पहले था। आधुनिक युग में जहाँ प्रकृति का दोहन और पर्यावरणीय संकट बढ़ता जा रहा है, वहाँ गोंड चित्र हमें प्रकृति के साथ संतुलित संबंध बनाने का संदेश देते हैं। गोंड कला यह सिखाती है कि जीवन का वास्तविक अर्थ तभी है जब मनुष्य प्रकृति और अन्य जीवों के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाए रखे। इस दृष्टि से गोंड चित्रकला

केवल एक कलात्मक धरोहर नहीं, बल्कि एक गहन दार्शनिक दृष्टिकोण है, जो मानव जीवन को अधिक संवेदनशील, संतुलित और पर्यावरण-हितैषी बनाने की प्रेरणा देता है।

गोंड चित्रों की शैली और तकनीक

गोंड चित्रकला मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृति की एक अनूठी धरोहर है, जिसकी शैली और तकनीक इसे अन्य लोककलाओं से अलग करती है। यह कला गोंड जनजाति की धार्मिक आस्थाओं, जीवन दृष्टि और प्रकृति-प्रेम का सजीव प्रतिबिंब है। गोंड चित्रों की विशेषता यह है कि इनमें साधारण रेखाओं, बिंदुओं और ज्यामितीय आकृतियों के माध्यम से अत्यंत आकर्षक और जीवंत छवियाँ प्रस्तुत की जाती हैं। गोंड कलाकार मानते हैं कि संसार की हर वस्तु, चाहे वह वृक्ष हो, पक्षी हो, पशु हो या नदी-पर्वत, उसमें आत्मा का वास है और उसे चित्रित करना मात्र कलात्मक कार्य नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक साधना भी है। यही दर्शन उनकी शैली और तकनीक को गहराई प्रदान करता है।

गोंड चित्रों की सबसे प्रमुख शैलीगत विशेषता है रेखाओं और बिंदुओं का प्रयोग। कलाकार पहले आकृति की रूपरेखा खींचते हैं और फिर उसके भीतर बारीक रेखाएँ, घुमावदार लकीरें, बिंदु और पैटर्न भरते हैं। यह तकनीक न केवल चित्र को सजावटी रूप देती है, बल्कि उसमें गति और जीवंतता भी भर देती है। उदाहरणस्वरूप, यदि किसी पक्षी को चित्रित किया जाता है, तो उसके पंखों पर बनी हुई लहरदार रेखाएँ उसे उड़ान भरते हुए प्रतीत कराती हैं। इसी प्रकार मछली के शरीर पर बने बिंदु और लहरें उसे पानी में तैरते हुए जीवंत बना देते हैं।

रंगों का प्रयोग भी गोंड चित्रकला की तकनीक का अहम हिस्सा है। परंपरागत रूप से गोंड कलाकार प्राकृतिक रंगों का उपयोग करते थे। लाल रंग गेरू मिट्टी से, पीला हल्दी से, काला कोयले से, सफेद चूने या चावल के पेस्ट से और हरा पत्तियों से तैयार किया जाता था। इन रंगों का प्रतीकात्मक महत्व भी है—लाल उर्जा और जीवन का, पीला पवित्रता का, हरा समृद्धि का और काला रहस्य का प्रतीक माना जाता है। आधुनिक समय में हालांकि कलाकार ऐक्रेलिक और वॉटरकलर का भी उपयोग करते हैं, लेकिन उनकी शैलीगत पहचान इन रंगों की प्रतीकात्मकता से अब भी जुड़ी हुई है।

National Conference on Recent Advances in Engineering, Technology, Science, Management and Humanities (NCRAETSMH – 2025)

23rd February, 2025, Nagpur, Maharashtra, India.

गोंड चित्रों की शैली का एक और महत्त्वपूर्ण पहलू है प्रकृति और जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति। गोंड कलाकार वृक्षों को जीवन का आधार मानते हैं और उनकी चित्रकला में 'कल्पवृक्ष' या 'जीवन वृक्ष' की आकृतियाँ बार-बार दिखाई देती हैं। इन वृक्षों पर पक्षियों, जानवरों और मनुष्यों की आकृतियाँ बनाकर यह संदेश दिया जाता है कि समस्त जीवन आपस में जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार पशु-पक्षियों की आकृतियाँ उनके सांस्कृतिक प्रतीकवाद को दर्शाती हैं—मछली समृद्धि का, मोर सौंदर्य का, बाघ शक्ति का और साँप ऊर्जा का प्रतीक है। इस प्रकार उनकी शैली में न केवल दृश्य सौंदर्य है, बल्कि गहरे अर्थ और दर्शन भी निहित हैं।

तकनीकी दृष्टि से गोंड चित्रकला का सबसे अनूठा गुण है गतिशीलता और लयबद्धता। बिंदुओं और रेखाओं का दोहराव एक प्रकार की लय पैदा करता है, जो चित्रों को संगीतात्मक बना देता है। दर्शक को यह अनुभव होता है मानो चित्र सांस ले रहे हों और उनमें जीवन प्रवाहित हो रहा हो। यही कारण है कि गोंड चित्रों को केवल देखने भर से ही उनमें गति और संवेदना का अनुभव होता है।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक मान्यताओं में गोंड चित्रों की भूमिका

मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति की धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन-शैली में चित्रकला का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। गोंड समाज अपने जीवन के हर पक्ष को प्रकृति और देवत्व से जोड़कर देखता है। उनके लिए चित्रकला केवल कला का साधन नहीं, बल्कि आस्था और परंपरा का माध्यम है। गोंड चित्रों की प्रमुख भूमिका धार्मिक अनुष्ठानों, त्योहारों, विवाह और अन्य सामाजिक अवसरों पर स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। ये चित्र न केवल घरों और आँगनों की सजावट का हिस्सा हैं, बल्कि धार्मिक मान्यताओं, लोककथाओं और सामूहिक जीवन की निरंतरता के भी प्रतीक हैं।

धार्मिक दृष्टि से, गोंड चित्रों में देवताओं, देवी-देवियों और पौराणिक पात्रों को विशेष रूप से चित्रित किया जाता है। गोंड समाज अपने लोकदेव 'फेनोर देव' तथा 'बरदेव' की पूजा विशेष श्रद्धा से करता है। बरदेव को प्रायः वृक्ष पर बैठा हुआ दर्शाया जाता है, जो वन और जीव-जंतुओं का रक्षक माना जाता है। गोंड कलाकार इस दृश्य को दीवारों और कैनवास पर उतारते हैं, जिससे यह विश्वास बना रहे कि देवता सदैव उनकी रक्षा कर रहे हैं। इसी प्रकार विभिन्न पशु-पक्षियों को भी देवत्व का प्रतीक मानकर चित्रित किया जाता है। साँप ऊर्जा और सुरक्षा का, मछली समृद्धि का, जबकि बाघ साहस और शक्ति का प्रतीक माना जाता है। इन प्रतीकों के माध्यम से गोंड समाज अपनी धार्मिक मान्यताओं को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाता है।

सांस्कृतिक परंपराओं में, गोंड चित्रों का स्थान और भी व्यापक है। विवाह जैसे शुभ अवसरों पर घर की दीवारों और आँगनों को विशेष चित्रों से सजाया जाता है। इन्हें 'चौक पूजन' या 'भूमि सज्जा' कहा जाता है, जिनका उद्देश्य घर में शुभता और समृद्धि लाना होता है। त्योहारों जैसे कि दिवाली, करमा, और हरेली में भी गोंड चित्रों का विशेष महत्व है। इन अवसरों पर बनाए गए चित्र समुदाय की सामूहिक भागीदारी को दर्शाते हैं और उत्सव को धार्मिक आभा प्रदान करते हैं।

गोंड चित्रों में लोककथाओं और मौखिक परंपराओं का भी गहरा प्रभाव दिखाई देता है। गोंड समाज सदियों से अपनी कथाओं और दंतकथाओं को चित्रों के माध्यम से संरक्षित करता आया है। इन कथाओं में प्रकृति, देवता, पूर्वज और जीवन दर्शन का समावेश होता है। चित्रों के माध्यम से ये कथाएँ न केवल मनोरंजन करती हैं, बल्कि समाज को नैतिक और आध्यात्मिक संदेश भी देती हैं। इस दृष्टि से गोंड चित्र मौखिक परंपरा और लिखित संस्कृति के बीच एक जीवंत सेतु के रूप में कार्य करते हैं।

गोंड चित्रों की एक और महत्त्वपूर्ण भूमिका सामूहिकता और सामाजिक एकता से जुड़ी है। जब कोई धार्मिक अनुष्ठान या त्योहार होता है, तो पूरा समुदाय मिलकर चित्र बनाने में सहयोग करता है। यह परंपरा न केवल कला को जीवित रखती है, बल्कि सामाजिक बंधन और सामूहिक चेतना को भी मजबूत करती है। गोंड समाज मानता है कि चित्रकला केवल व्यक्तिगत अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामूहिक संस्कृति का प्रतिबिंब है। अतः मध्य प्रदेश में गोंड चित्रकला धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं की आत्मा है। यह केवल सौंदर्य या सजावट की कला नहीं, बल्कि गोंड समाज के विश्वासों, परंपराओं और सामूहिक जीवन का सजीव दस्तावेज है। गोंड चित्रों ने आस्था और संस्कृति दोनों को सुरक्षित रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है और यही कारण है कि यह कला आज भी गोंड जनजाति की पहचान और गौरव का अभिन्न हिस्सा बनी हुई है।

आधुनिक समय में गोंड चित्रों का विकास

गोंड चित्रकला, जो मध्य प्रदेश की आदिवासी कला परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, आज वैश्विक स्तर पर अपनी अलग पहचान बना चुकी है। इस चित्रकला का मूल स्वरूप प्राकृतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन पर आधारित था, लेकिन आधुनिक समय में इसका स्वरूप और संदर्भ बदल गया है। पहले गोंड कलाकार घरों की दीवारों, आंगनों और मिट्टी की सतहों पर अपने जीवन दर्शन, प्रकृति के प्रति आस्था और देवताओं की पूजा-

National Conference on Recent Advances in Engineering, Technology, Science, Management and Humanities (NCRAETSMH – 2025)

23rd February, 2025, Nagpur, Maharashtra, India.

अर्चना के लिए चित्र बनाते थे, किंतु अब यह कला कागज़, कपड़े, कैनवास और अन्य माध्यमों पर उतारी जाने लगी है। इस परिवर्तन ने न केवल इस कला को संरक्षित किया है बल्कि इसे बाज़ार की दृष्टि से भी मूल्यवान बना दिया है।

आधुनिक समय में गोंड चित्रकला का सबसे बड़ा विकास इसकी व्यावसायिकता और संस्थागत पहचान के रूप में देखा जा सकता है। अब यह कला केवल त्योहारों और अनुष्ठानों तक सीमित नहीं रही बल्कि कला प्रदर्शनियों, गैलरियों, संग्रहालयों और अंतरराष्ट्रीय मंचों तक पहुँच चुकी है। गोंड कलाकार जैसे – जतिन श्याम, भज्जू श्याम, दुर्गा बाई, बड़कुला बाई आदि ने इस कला को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन कलाकारों ने गोंड चित्रों के पारंपरिक विषयों को बनाए रखते हुए आधुनिक तकनीकों और नए माध्यमों का उपयोग किया है, जिससे यह कला परंपरा और आधुनिकता का अद्भुत संगम प्रस्तुत करती है। आधुनिक विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि गोंड चित्रों ने पुस्तक चित्रण, पोस्टर, वॉल पेंटिंग, डिजिटल आर्ट और यहां तक कि फैशन और इंटीरियर डिज़ाइन में भी अपनी जगह बनाई है। कई पुस्तकें और पत्रिकाएँ गोंड कला से सजी हुई हैं, जो इस बात का प्रमाण हैं कि यह चित्रकला आज के समय में नए पाठकों और दर्शकों को भी आकर्षित कर रही है। इसके अलावा सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं ने भी गोंड कला को बढ़ावा देने के लिए कार्यशालाएँ, प्रशिक्षण शिविर और कला महोत्सव आयोजित करना शुरू किया है, जिससे नई पीढ़ी के कलाकार इस परंपरा से जुड़ रहे हैं।

गोंड चित्रों का आधुनिक विकास केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान के स्तर पर भी महत्त्वपूर्ण है। यह कला अब आदिवासी समाज की पहचान, इतिहास और सांस्कृतिक धरोहर को विश्व मंच पर प्रस्तुत कर रही है। आधुनिक युग में गोंड कला केवल एक कलात्मक गतिविधि नहीं रह गई है, बल्कि यह आदिवासी समुदाय की अस्मिता, परंपरा और विचारधारा का प्रतीक भी बन गई है। आज इसे 'ट्राइबल आर्ट' के रूप में विश्वभर में सराहा जाता है और इससे गोंड समाज की सांस्कृतिक विरासत जीवित और सुरक्षित है। आधुनिक समय में गोंड चित्रों का विकास एक निरंतर और गतिशील प्रक्रिया है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। यह कला न केवल समय की मांग के अनुसार नए आयामों को अपना रही है, बल्कि आदिवासी जीवन दर्शन, प्रकृति के प्रति श्रद्धा और सांस्कृतिक आस्था को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने का कार्य भी कर रही है। गोंड चित्रकला का यह रूप आधुनिक युग में कला, संस्कृति और समाज के बीच एक सेतु की तरह कार्य कर रहा है।

National Conference on Recent Advances in Engineering, Technology, Science, Management and Humanities (NCRAETSMH – 2025)

23rd February, 2025, Nagpur, Maharashtra, India.

गोंड चित्रकला का सामाजिक एवं आर्थिक महत्व

गोंड चित्रकला मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान और आदिवासी समाज की धरोहर मानी जाती है। यह कला केवल सौंदर्यबोध या धार्मिक आस्था की अभिव्यक्ति भर नहीं है, बल्कि इसका गहरा सामाजिक और आर्थिक महत्व भी है। गोंड समाज के लोग सदियों से अपने जीवन, विश्वास, रीति-रिवाज और प्रकृति के साथ संबंधों को चित्रों के माध्यम से व्यक्त करते रहे हैं। इस परंपरा ने न केवल उनकी सामाजिक एकता को मजबूत किया है बल्कि आज यह उनके आर्थिक जीवन का भी एक अहम साधन बन चुकी है।

सामाजिक महत्व

गोंड चित्रकला गोंड समुदाय की सामाजिक पहचान का प्रतीक है। यह उनके जीवन दर्शन, परंपराओं, धार्मिक आस्थाओं और प्राकृतिक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करती है। त्योहारों, विवाह, जन्मोत्सव और अन्य धार्मिक अवसरों पर गोंड चित्र बनाए जाते हैं, जिनका उद्देश्य घर-परिवार और समाज के लिए शुभ एवं मंगलकारी वातावरण तैयार करना होता है। गोंड समाज में यह चित्र न केवल सजावट के लिए होते हैं बल्कि सामूहिक एकता, परंपरा के संरक्षण और सांस्कृतिक मूल्यों को आगे बढ़ाने का माध्यम भी होते हैं। इसके माध्यम से समुदाय की परंपराएँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती हैं। गोंड चित्रों में प्रकृति, जीव-जंतु, वृक्ष, पंछी और पौराणिक कथाएँ अंकित की जाती हैं। इससे गोंड समाज के बच्चों और युवाओं को अपने परिवेश, संस्कृति और लोककथाओं के बारे में ज्ञान मिलता है। इस प्रकार यह कला शिक्षा और सांस्कृतिक प्रशिक्षण का भी माध्यम बनती है। साथ ही, गोंड चित्रों के जरिए समाज में धार्मिक और नैतिक मूल्यों का प्रचार होता है, जो सामाजिक एकता और नैतिक अनुशासन को बनाए रखते हैं।

आर्थिक महत्व

आधुनिक समय में गोंड चित्रकला ने गोंड समाज की आर्थिक स्थिति सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पहले यह कला घर की दीवारों और आंगनों तक सीमित थी, लेकिन आज यह कागज, कैनवास, कपड़े, लकड़ी और अन्य माध्यमों पर बनाई जाने लगी है। इससे यह बाज़ार में बिकने योग्य वस्तु बन गई है। स्थानीय हाट-बाज़ारों, मेलों और कला प्रदर्शनियों में गोंड चित्रों की बड़ी माँग रहती है। कई गोंड कलाकार राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हो चुके हैं। उनके चित्र कला दीर्घाओं, संग्रहालयों और पुस्तकों में प्रदर्शित किए

जाते हैं। इससे गोंड समुदाय को रोजगार और आय का स्रोत मिला है। महिलाएँ और युवा भी इस कला से जुड़कर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रहे हैं। गोंड चित्रकला से जुड़े हस्तशिल्प उत्पाद, जैसे- बैग, कपड़े, शोपीस और सजावटी सामान, पर्यटन उद्योग में भी लोकप्रिय हो रहे हैं।

सरकार और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा गोंड कला को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण शिविर, प्रदर्शनियाँ और विपणन की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं। इससे कलाकारों को आर्थिक सुरक्षा के साथ-साथ पहचान भी मिल रही है। यही कारण है कि गोंड कला अब केवल परंपरा का प्रतीक नहीं रही, बल्कि यह गोंड समाज की आर्थिक समृद्धि और विकास का एक महत्वपूर्ण साधन बन गई है। मध्य प्रदेश में गोंड चित्रकला का सामाजिक और आर्थिक महत्व दोनों ही अत्यंत गहरा है। यह कला न केवल गोंड समाज की सांस्कृतिक पहचान और एकता को सशक्त बनाती है, बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी उन्हें आत्मनिर्भर बनाती है। गोंड चित्रकला का वर्तमान स्वरूप परंपरा और आधुनिकता का संगम है, जो आदिवासी समाज को सामाजिक सम्मान और आर्थिक स्थिरता दोनों प्रदान कर रहा है।

निष्कर्ष

मध्य प्रदेश में गोंड चित्रों की उत्पत्ति और विकास एक अद्भुत सांस्कृतिक यात्रा है, जिसने जनजातीय जीवन की आस्थाओं, अनुभवों और प्रकृति-प्रेम को कला के माध्यम से अमर कर दिया है। गोंड चित्र केवल रंग और आकृतियों का खेल नहीं, बल्कि एक ऐसी दार्शनिक दृष्टि है, जो जीवन के हर तत्व में दिव्यता देखती है। इस कला ने समय के साथ स्वयं को परिवर्तित किया है, लेकिन इसकी मूल पहचान और आत्मा आज भी वैसी ही है जैसी सदियों पहले थी। गोंड चित्रकला ने लोककला से आगे बढ़कर विश्वकला की श्रेणी में स्थान पाया है, और यह कहना उचित होगा कि यह कला न केवल गोंड जनजाति की धरोहर है, बल्कि सम्पूर्ण मानवता की साझा सांस्कृतिक विरासत भी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गोंड, हर्ष। (2022)। मध्य प्रदेश, भारत की गोंड कला के पुनर्निर्माण के लिए एक अध्ययन। 10(2), 1-7। 13140/आरजी.2.2.19235.12328।
2. रथिया, धर्म और बी, प्रवीण और देशपांडे, सुधा और दास, और रथिया, परिनिता। (2022)। छत्तीसगढ़ के

मुंगेली जिले के पथरिया ब्लॉक के गोंड जनजाति और गैर-जनजाति लड़कों की वृद्धि स्थिति का अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लाइफ साइंसेज रिसर्च, 3(2), 10-19।

3. पंवार, अपेक्षा और रानी, अर्चना। (2021)। पारंपरिक गोंड कला में समकालीन परिदृश्य। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च - ग्रंथालय, 9(1)ः169-175।
4. कुमार, डॉ. और बौध, मिलिंद। (2021)। गोंड जनजाति के बीच पारंपरिक त्योहारों का अध्ययन। यूजीसी केयर ग्रुप 1 जर्नल, 117(4), 763-772।
5. पाढ़ी, सौभाग्य और गोस्वामी, मनाश। (2020)। जनजातीय लोककथा से सौंदर्यात्मक और धार्मिक चित्रकला तकः मौखिक कथाओं का दृश्य कला में संक्रमण। जर्नल ऑफ रिलिजन एंड हेल्थ। 63(2), 1-12।
6. रानी, अर्चना और प्रमुख। (2019)। प्रमुख कलाकारों की गोंड चित्रकला (जंगरह सिंह श्याम, राम सिंह उर्वेती का एक अन्वेषणात्मक अध्ययन)। जर्नल ऑफ कॉमर्स एंड ट्रेड। 14(2)ः41-47।
7. चेन, सी-जिंग और लिन, चिह-लॉन्ग और ली, सैंडी और कांग, यें-यू। (2016)। चित्रकला की सराहना के अनुभवों पर मीडिया रूपों का प्रभाव। इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन क्रॉस-कल्चरल डिज़ाइन, 97(41). 338-344।
8. भारद्वाज, कुमकुम और उकांडे, अनु। (2014)। गोंड जनजातीय कला में रंगः मध्य प्रदेश की गोंड चित्रकला में रंगों की व्याख्या और आलोचनात्मक मूल्यांकन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च - ग्रंथालय। 2(3)ः1-5।
9. पवार, निशा। (2013)। महाराष्ट्र में गोंड जनजातीय समुदाय के बीच मीडिया संपर्क। कर्नाटकी विश्वविद्यालय जर्नल ऑफ सोशल साइंस, 3(7). 38-46।
10. रोमा चटर्जी (2016)। ''चित्रों के साथ बातचीत''। राउटलेज इंडिया, पेपरबैक।
11. मिश्रा, कमल के. (2013)। ''जनजाति और जनजातिवाद पर''। वी. के. श्रीवास्तव (संपादक)। ''भारत में जनजातियाँः अवधारणाएँ, संस्थाएँ और प्रथाएँ''। नई दिल्लीः सीरियल्स पब्लिकेशंस।
12. भंग्या भूक्या (2017)। ''परिधि की जड़ें''। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।